Result Mitra

रिजल्ट मित्र स्पेशल

Hand Written

करंट अफेयर्स नोट्स

29

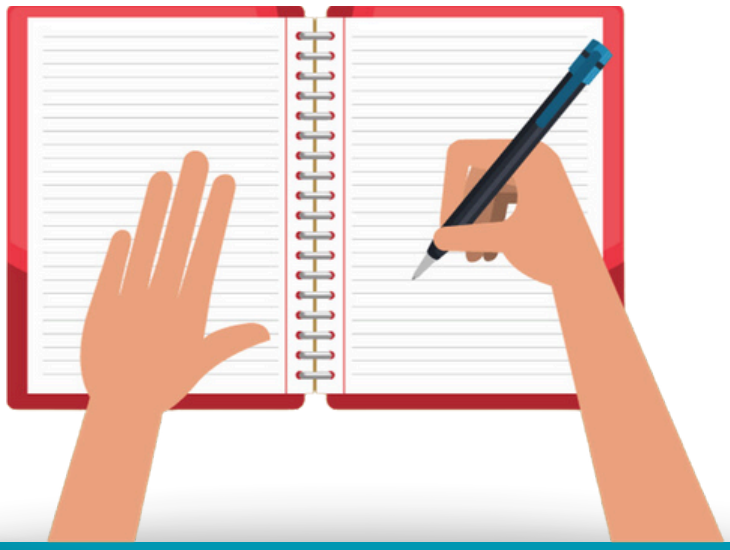

मलेरिया उन्मूलन में भारत की प्रगति

- भारत में मलेरिया उन्मूलन एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य उद्देश्य रहा है। मलेरिया एक संक्रामक बीमारी है। जो प्लास्मोडियम नामक परजीवी द्वारा होती है। और एनोफिलीज मच्छरों के माध्यम से फैलती है।
- यह रोग भारत में कई दशकों से एक बड़ी स्वास्थ्य चुनौती रहा है। लेकिन कुछ वर्षों में मलेरिया उन्मूलन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई है।
- भारत ने मलेरिया के मामलों को 97% से अधिक कम करने में सफलता प्राप्त कर ली है। 2023 तक मामले घटकर केवल 2 मिलियन रह गए हैं। जो 2030 तक 0 मलेरिया मुक्त स्थिति की ओर देश की प्रगति को दर्शाता है।
- 2015 से 2023 तक मलेरिया के मामलों और मृत्यु में लगभग 80% की गिरावट आई है।
- भारत का लक्ष्य 2027 तक स्वदेशी मलेरिया के मामलों को शून्य करना और मलेरिया को फिर से पनपने से रोकना है।
- भारत 2030 तक मलेरिया को समाप्त करने के अपने लक्ष्य पर अडिग है।

मलेरिया के मामलों में कमी

- मलेरिया मामलों में गिरावट
- मौतों में कमी

मलेरिया नियंत्रण के उपाय

मच्छरजनित नियंत्रण

नई दवाओं और वैक्सीनेशन का प्रयोग

जागरूकता और शिक्षा

स्वास्थ्य अभियानों का प्रचार

सामुदायिक भागीदारी

नवीनतम शोध तकनीकें

जीआईएस और डाटा एनालिटिक्स

राज्य स्तरीय कार्यक्रमों की सफलता

संघीय और राज्य सरकारों का सहयोग

मलेरिया उन्मूलन में चुनौती

(1) मच्छरों के प्रतिरोधी स्वरूप

(2) सामुदायिक सहयोग की कमी

(3) वित्तीय और भौगोलिक बाधाएं

(4) दवाओं का समुचित भंडारण न होना।

23/P3

मलेरिया उन्मूलन में भारत की प्रगति

लक्षण:

- बुखार, ठंड लगना, सिरदर्द, पसीना और थकान।
- Plasmodium vivax भारत में मलेरिया के अधिकांश मामलों का कारण है।

भारत में मलेरिया का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- 1953:राष्ट्रीय मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम (NMCP) शुरू किया गया।
- 1958:राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम (NMEP) शुरू किया गया।
- 1997:मलेरिया पर नियंत्रण और रोकथाम के लिए रोल बैक मलेरिया पहल।
- 2015:भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मलेरिया उन्मूलन 2030 लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की।

2021 में सिक्किम और गोवा ने मलेरिया मुक्त राज्य का दर्जा प्राप्त किया। राजस्थान, गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों ने मलेरिया के मामलों में भारी गिरावट दर्ज की।

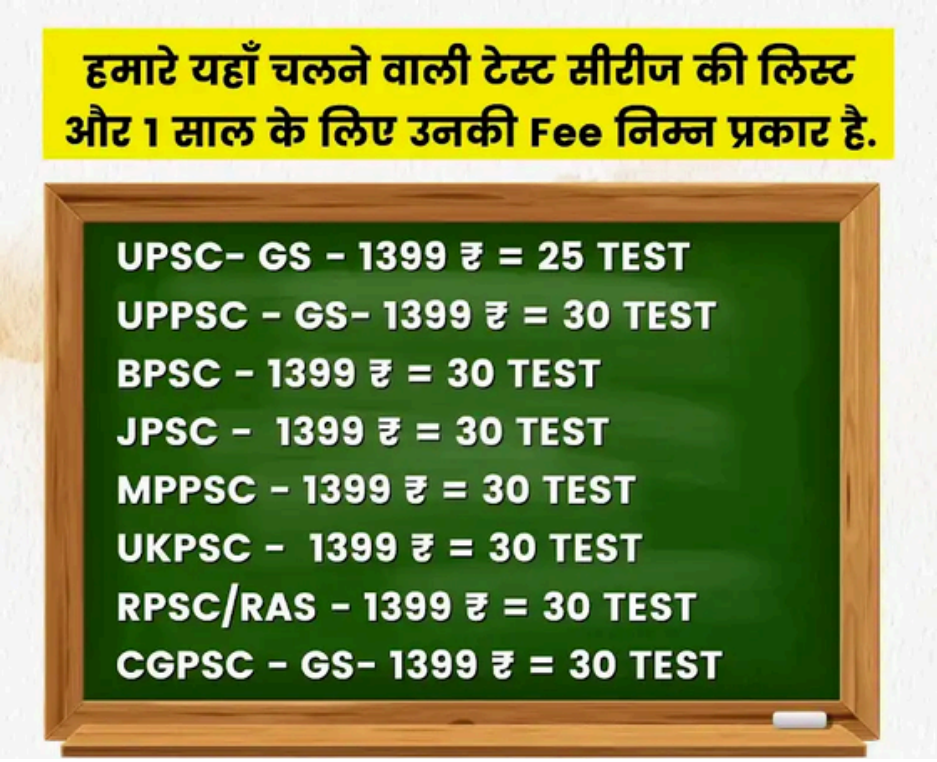

मारबर्ग वायरस

मारबर्ग वायरस (Marburg Virus) एक अत्यधिक संक्रामक और घातक फिलोवायरस परिवार का सदस्य है जो मारबर्ग बुखार या मारबर्ग वायरस रोग का कारण बनता है।

चर्चा में

यह वायरस अफ्रीका में पाया जाता है और इसके कारण होने वाली बीमारी की मृत्यु दर बहुत अधिक होती है। यह वायरस इबोला वायरस के परिवार का सदस्य है और दोनों में कई समानताएं हैं जैसे कि लक्षणों की शुरुआत और संक्रमण के तरीके।

मारबर्ग वायरस का नाम जर्मनी के मारबर्ग शहर से पड़ा जहाँ पहली बार 1967 में इसका प्रकोप देखा गया।

यह एक फिलोवायरस है जो स्ट्रैंडेड RNA वायरस की श्रेणी में आता है।

मारबर्ग वायरस इंसानों में संक्रमित जानवरों (मुख्य रूप से बंदर और चमगादड़) से सीधे के द्वारा फैलता है। इसके अलावा संक्रमित व्यक्ति के शारीरिक तरल पदार्थों जैसे रक्त, मल, म्यूकस या शरीर के अन्य फ्लूइड्स से भी फैल सकता है।

मारबर्ग वायरस को पहली बार 1967 में जर्मनी के मारबर्ग और फ्रैंकफर्ट शहरों में पहचाना गया था।

मारबर्ग वायरस के लक्षण

मारबर्ग वायरस संक्रमण के लक्षण आमतौर पर वायरस के संपर्क में आने के 5-10 दिन बाद प्रकट होते हैं इनके लक्षणों में शामिल हैं

* अचानक बुखार,
* पेट में ऐंठन
* रक्तस्राव (नाक, मसूड़े, पेट)
* त्वचा पर लाल धब्बे
* आंतरिक रक्तस्राव
* मलत्याग से रक्त का निकलना

मारबर्ग वायरस का प्रसार

- Community
- प्राकृतिक मेजबान
- संक्रमण का मार्ग
- साम्प्रदायिक प्रकोप

मारबर्ग वायरस: परिचय

1. **वर्गीकरण:**
   - परिवार: Filoviridae
   - जीनस: Marburgvirus
   - अन्य संबंधित वायरस: इबोला वायरस।
   -
2. **पहली बार पहचान:**
   - 1967 में जर्मनी के मारबर्ग और फ्रैंकफर्ट शहरों और यूगोस्लाविया (अब सर्बिया) में इसका पहला प्रकोप देखा गया।
   - यह प्रकोप संक्रमित हरी बंदरों (African Green Monkeys) के संपर्क में आने से हुआ।
   -
3. **संक्रमण का स्रोत:**
   - प्राकृतिक मेज़बान: अफ्रीकी फल चमगादड़ (Rousettus aegyptiacus)।
   - संक्रमण संक्रमित जानवरों या मनुष्यों के सीधे संपर्क से फैलता है।

पूर्व PM मनमोहन सिंह का मेमोरियल

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने डॉ. मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए स्थान आवंटित करने का निर्णय लिया है।

ज्ञातव्य है। कि 28 दिसंबर 2024 को पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का दिल्ली के निगमबोध घाट पर पूर्ण सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

जीवन परिचय

जन्म - 26 सितम्बर 1932 (अविभाजित भारत के पंजाब प्रान्त में)

निधन - 26 दिसंबर 2024

- 1982-1985- RBI के गवर्नर
- 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष बने।
- 24 जुलाई 1991 को भारत में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति लागू की गई जिसमें मनमोहन सिंह की प्रमुख भूमिका थी।
- 1991-1996 तक भारत के वित्त मंत्री के रूप में कार्य किया।
- 2004-2014 तक भारत के चौदहवें प्रधानमंत्री

वो देश के मनमोहन थे

कार्यकाल में महत्वपूर्ण उपलब्धियां

जून 2005 - सूचना का अधिकार

सितंबर 2005 - रोजगार गारंटी योजना

अक्टूबर 2008 - अमेरिका से न्यूक्लियर डील

जनवरी 2009 - पहचान के लिए आधार कार्ड

अप्रैल 2010 - शिक्षा का अधिकार

1987 - पद्मभूषण

प्रमुख पुस्तक - चैलेंजेज इंडिया

डॉ. मनमोहन सिंह का जीवन परिचय

संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD) में काम किया।
विश्व बैंक में भी सेवा दी।

आर्थिक सुधार:

डॉ. मनमोहन सिंह ने नरसिम्हा राव सरकार के तहत कई आर्थिक सुधारों की शुरुआत की:

1. **उदारीकरण (Liberalization):**
   - लाइसेंस राज को समाप्त किया।
   - विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया।
2. **निजीकरण (Privatization):**
   - सार्वजनिक उपक्रमों की भूमिका को सीमित किया।
   - निजी क्षेत्र को बढ़ावा दिया।
3. **वैश्वीकरण (Globalization):**
   - विदेशी कंपनियों के लिए भारत के बाजार खोले।
   - व्यापार और निवेश नीतियों को सरल बनाया।

परिवार नियोजन में लैंगिक असमानता

परिवार नियोजन का उद्देश्य न केवल जनसंख्या नियंत्रण करना है बल्कि यह स्वास्थ्य, शिक्षा, और जीवन स्तर को सुधारने के लिए भी महत्वपूर्ण है

भारत जैसे विकासशील देशों में परिवार नियोजन के क्षेत्र में लैंगिक असमानता एक गंभीर समस्या है।

मुख्य बिंदु

(1) महिलाओं पर अधिक दबाव

(2) नसबंदी का असमान वितरण

(3) स्वास्थ्य पर असर

(4) निर्णय लेने का अधिकार

(5) सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ

(6) आर्थिक असमानता

समाधान

- शिक्षा और जागरूकता
- लिंग समझदारी वाले कार्यक्रम
- पुरुषों की भागीदारी
- स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार

परिवार नियोजन में लैंगिक असमानता

लैंगिक असमानता के कारण :-

1. पितृसत्तात्मक समाज
2. शिक्षा और जागरूकता की कमी
3. सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएँ
4. स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच

भारत सरकार की पहलें और कार्यक्रम

1. राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम (1952)
2. मिशन परिवार विकास (Mission Parivar Vikas)
3. जननी सुरक्षा योजना
4. जागरूकता अभियान

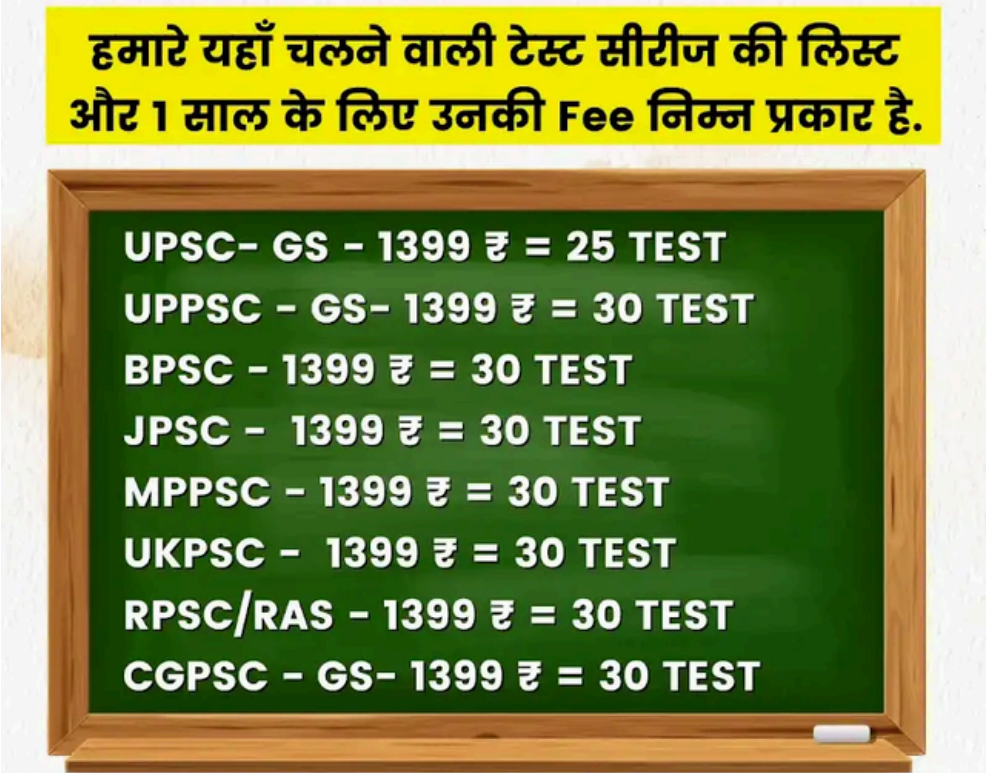

सुजुकी के पूर्व चेयरमेन ओसामु सुजुकी का निधन

ओसामु सुजुकी जो जापानी ऑटोमोबाइल निर्माता सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के लंबे समय तक चेयरमेन रहे उनका 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

ओसामु सुजुकी के नेतृत्व में सुजुकी ने छोटे और किफायती वाहनों के क्षेत्र में अपना नाम कमाया और वैश्विक बाजार में मजबूत पकड़ बनाई।

ओसामु सुजुकी का भारत में विशेष योगदान था। जहाँ मारुति सुजुकी ने कंपनी का विस्तार किया।

- ओसामु सुजुकी का जन्म 1929 में जापान के शिमोनोसेकी में हुआ। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत सुजुकी मोटर कंपनी में 1958 में की थी। 1978 में वे कंपनी के अध्यक्ष बने।